

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये द्विनरतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নारायणीये द्विनरतितमं दशकम् ॥

कर्ममिश्रभक्तिस्वरूपवर्णनम्

রেদৈস্সর্বাণি কর্মাণ্যফলপরতয়া
র্ষণিতানীতি বুদ্ধরা
তানি ৎরয্যর্পিতান্যের হি সমনুচরন্
যানি নৈষ্কর্ম্যমীশ।
মা ভূদ্রেদৈর্নিষিদ্ধে কুহচিদপি মনঃ
কর্মরাচাং প্রবৃত্তি -
দূর্র্জং চেদরাপ্তং তদপি খলু ভর -
তর্পযে চিৎপ্রকাশে ॥ 92.1 ॥

যস্তুন্যঃ কর্মযোগস্তর ভজনময -
স্তত্র চাভীষ্টমূর্তিং
হৃদ্যাং সত্বেকরূপাং দৃষদি হৃদি মৃদি
ক্লাপি রা ভারযিৎরা।
পুষ্্পৈর্গন্ধৈর্নিরৈদ্যৈরপি চ ব্রিচিৎতৈঃ
শক্তিতো ভক্তিপুতৈ -
নিত্যং রযাং সপর্যাং ব্রিদধদযি ব্রিভো
ৎরৎপ্রসাদং ভজেযম্ ॥ 92.2 ॥

স্ত্রীশূদ্রাস্ত্ৰংকথাদিশ্রবণবিরহিতা
আসতাং তে দযার্হা -
স্ত্ৰংপাদাসন্নযাতান্ দ্বিজকুলজনুষো
হন্ত শোচাম্যশান্তান্।

बृत्त्यर्थं ते यजन्तो बह्वकथितमपि
 ९रामनाकर्णयन्तो
 दृष्ट्वा रिद्याभिजातैः किमु न रिदधते
 तादृशं मा कृथा माम् ॥ 92.3 ॥

पापोहयं कृष्णरामेत्यभिलपति निजं
 गूहितुं दुश्चरित्रं
 निर्लज्जस्यस्य राचा बह्वतरकथनी -
 यानि मे रिघ्नितानि।
 भ्राता मे रक्ष्यशीलो भजति किल सदा
 रिष्णुमिथं बुधांस्ते
 निन्दन्त्यैच्छैर्हसन्ति ९रयि निहितमतीं -
 स्तादृशं मा कृथा माम् ॥ 92.4 ॥

श्वेतच्छायं कृते ९रां मुनिरररपुषं
 प्रीणयन्ते तपोभि -
 स्त्रेतायां ऋकऋराद्यङ्कितमरुणतनुं
 यञ्जुरूपं यजन्ते।
 सेरन्ते तन्मार्गैर्गिरिलसदरिगदं
 द्वापरे श्यामलाङ्गं
 नीलं सङ्कीर्तनादैरिह कलिसमये
 मानुषाञ्छ्वां भजन्ते ॥ 92.5 ॥

सोहयं कालेयकालो जयति मुररिपो
 यत्र सङ्कीर्तनादै -
 निर्यत्नेरेर मार्गैरखिलद न चिरा -
 त्त्रुप्रसादं भजन्ते।
 जातास्त्रेताकृतदारपि हि किल कलौ

सम्भरं कामयन्ते
दैरातत्रैर जातान् रिषयरिषरसै -
र्मा रिभो रण्णयाम्मान् ॥ 92.6 ॥

ভক্তাস্তারং কলৌ স্যুর্দ্রমিলভুরি ততো
ভুরিশস্ত্র চোচ্চৈঃ
কারেরীং তাম্রপর্ণীমনু কিল কৃতমা -
লাং চ পুণ্যাং প্রতীচীম্।
হা মামপ্যেতদন্তর্ভরমপি চ रिभो
किण्णिदण्णद्रसं ँर -
य्याशापाशैर्निबध्य द्रमय न भगरन्
पूरय ँरन्निषेराम् ॥ 92.7 ॥

दृष्टरा धर्मद्रहं तं कलिमपकरुणं
प्राङ्गुहीम्निं परीम्नि -
द्वन्तं र्याकृष्टखडेगाहपि न रिनिहतरान्
साररेदी गुणांशां।
ँरंसेराद्याशु सिध्येदसदिह न तथा
ँरंपरे चैष डीरु -
र्यत्तु प्रागेर रोगादिभिरपहरते
तत्र हा शिक्कयैनम् ॥ 92.8 ॥

गङ्गा गीता च गायत्र्यपि च तुलसिका
गोपिकाचन्दनं तं
सालग्रामाभिपूजा परपुरुष तथै -
कादशी नामरर्णाः।
एतान्यष्टाप्ययत्नान्यथि कलिसमये
ँरंप्रसादप्रबुद्ध्या

म्भिप्रं मुक्तिप्रदानीत्यभिदधुर्षय -
स्तेषु मां सज्जयेथाः ॥ 92.9 ॥

देरर्षीणां पितृणामपि न पुनरुणी
किङ्करो रा स डूमन्
योऽसौ सर्वात्मना एरां शरणमुपगत -
स्सरकृत्यानि हिंरा।
तस्योऽपन्नं रिकर्माप्याथिलमपनुद -
स्येः चित्तस्थितस्त्रं
तन्मे पापोऽथापान् परनपुरपते
रुक्मि भक्तिं प्रणीयाः ॥ 92.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्विनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥